International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-02-2023, Accepted: 24-02-2023, Published: 11-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 4-7

राजस्थानी लोक साहित्यः पर्यावरण एवं जीवन मूल्य

मधु
शोध छात्रा, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविघालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना, सांस्कृतिक विविधता, समृद्ध व उन्नत सांस्कृतिक परंपराओं के कारण राजस्थान प्रदेश का भारत के इतिहास में प्राचीन काल से ही गौरवमयी स्थान रहा है। इतिहास से जुड़ी अनेक विशिष्ट घटनाओं के कारण प्राचीन काल से ही राजस्थान प्रदेश इतिहासकारों के बीच चर्चा का विषय बना रहा। इस प्रदेश के गौरवमयी इतिहास को जानने में लोक साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। जिनमें लोक कथाएं, अनुष्ठान गीत, किंवदंतिया, लोक गीत, लोक गाथा, लोक नाट्य और लोक संगीत आदि शामिल हैं। जो प्राचीन काल से ही इस प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। लोक साहित्य में कहावतों, गीतों, लोक कथाओं और लोक नाट्य का प्रमुख स्थान माना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत पर्यावरण–पारिस्थितिकी संदर्भों से जुड़ी अनेक ऐसी राजस्थानी लोक कहावतों, लोक गीतों का संग्रह करने का प्रयास किया गया है, जो समाज में समय के अनुसार चलन –प्रचलन में रही तथा मानव जीवन से जमीनी स्तर पर जुड़ी हुई है। वास्तव में राजस्थानी लोक साहित्य राजस्थान के लोगों के उन्नत जीवन मूल्यों, लोकाचारो, परंपराओं, रीति रिवाजों की जानकारी प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। किसी समूह विशेष या किसी अन्य तरह के आपेक्ष में समझने की बजाय राजस्थानी लोक साहित्य को मानव जीवन से जुड़े विभिन्न सांस्कृतिक प्रतिबिंबो के रूप में दिखाना ही शोधार्थी का उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा राजस्थानी लोक साहित्य के जिन संदर्भों का प्रयोग पर्यावरण पहलूओं (पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरण चेतना, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता) को उजागर करने के लिए किया गया उसके माध्यम से राजस्थान के लोगों को उनकी उन्नत संस्कृति से परिचित कराने का यह शोध पत्र एक यत्न मात्र है।

मूल शब्दः पर्यावरण, लोक साहित्य, राजस्थान प्रदेश, लोक कहावतें, लोक गीत

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति ने प्राकृतिक प्रतिकूलता को सहज रूप से स्वीकार किया है तथा उसके आधार पर ऐसे जीवन दर्शन, लोकाचार, परंपराएं विकसित की हैं जिन्हें अपनाकर जीवन सहज रुप से जिया जा सके। वर्तमान में भारतीयों के उन जीवन दर्शनों, लोकाचारो, परंपराओं की झलक लोक साहित्य में स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है। लोक साहित्य जनसाधारण का साहित्य माना जाता है क्योंकि इससे आम लोगों के जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों, लोक अभिरुचियों के संदर्भ में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। प्रत्येक देश के प्राचीन साहित्य के आंतरिक संवेगों, परिस्थितियों में लोक वार्ता के तत्व ज्ञात एवं अज्ञात रुप में विद्यमान रहते हैं।[1] इसीलिए रशियन लोक साहित्यविद् लोकवार्ता को अतीत की प्रतिध्वनि मानते हैं और साथ ही साथ उसे वर्तमान की आवाज भी मानते हैं।[2] लोकवार्ता एक व्यापक अवधारणा है क्योंकि इसमें लोक विशेष में प्रचलित पुरानी प्रथाओं, धारणाओं, विश्वासों, गीतो, कथा–कहानियों आदि से संबंधित अलिखित साहित्य या पौराणिक बातों को शामिल किया जाता है।[3] लोक कहावतें, लोक गीत, लोक कथाएं आदि संपूर्ण लोक साहित्य, लोक परंपरा में व्याप्त उस मौखिक लोक व्यवहार का नाम है जो व्यक्ति, समाज, संस्कृति के उच्चतम प्रतिमान को सहज रूप में संजोकर उन्हें निरंतर क्रियाशील रखती हैं। राजस्थान में प्राचीन काल से ही लोक साहित्य में अनेक ऐसी कहावतें, गीत, कथाएँ प्रचलन में हैं जिनमें संपूर्ण मानवीय जीवन, जीवन मूल्यों, सदाचार, धर्म, आस्था, प्राकृतिक न्याय की व्यवस्था, भाग्यवाद के साथ मनुष्य में आगे बढ़ने का विचार, कुपथ पर चलने वालों को मिलने वाले दुष्परिणामों आदि के साथ–साथ पर्यावरण, भूगोल, जलवायु आदि पहलुओं को भी सुक्ष्मता से रेखांकित करने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है। जैसे कहावतों के संदर्भ में कहा जाता है कि–

कहावत वह रतन है जिनके पांच शब्द लंबे होते है और ये अनंत काल की अंगुलियों पर सदा जगमगाते है।[4]

लोक गीतों के संदर्भ में भी कहा जाता है कि– लोकगीत प्रकृति के उद्गार, तडक–भड़क से दूर, पारदर्शी शीशे की तरह स्वच्छ है। सरलता, रस, माधुर्य और लय इनके गुण है।[5]

यद्यपि यह सत्य है कि भारतीय जीवन दर्शन वैदिक आदर्शों पर आधारित है। वर्तमान समय में भी बहुत सारे सांस्कृतिक तथा धार्मिक कार्य वैदिक मंत्रों से पूर्ण होते हैं लेकिन यह भी सत्य है कि ग्राम्य जीवन में प्रचलित लोक मान्यताओ, लोकाचारों पर आधारित क्रियाकलापों ने साहित्य में अपना शीर्षस्थ स्थान बनाया है। आज भी धार्मिक, सांस्कृतिक गतिविधियों (मुंडन, कर्णवेध, यज्ञोपवित, विवाह आदि) में पुरोहित मंत्राच्चार के साथ–साथ ग्रामीण स्त्रियों के गीत सुनने को मिलते हैं। अतः लोक साहित्य न केवल इतिहास अपितु समाजशास्त्र, पर्यावरण, भूगोल जैसे विषयों के अनुसंधान में महत्ती भूमिका निभाता है।

राजस्थान प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य हैं। जो देश के कुल क्षेत्रफल के 10.41 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है। इस कुल क्षेत्रफल के 61.11 प्रतिशत भू–भाग पर थार का मरुस्थल पाया जाता है। यद्यपि राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित थार मरुस्थल वनस्पति, पशु, मानव, संस्कृति तथा प्राकृतिक सौंदर्य के मामले में विश्व के अन्य मरुस्थलो की तुलना मे श्रेष्ठ है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक आयुर्वेद की दृष्टि से इसका प्रमुख स्थान रहा है। आरंभ से ही राजस्थान प्रदेश अपनी जटिल भू–जैविकीय संरचना के कारण विषम परिस्थितियों से घिरा क्षेत्र है। अरावली पर्वतमाला इस संपूर्ण प्रदेश को दो अळग भागों में विभाजित करती है। राजस्थान का रियासती इतिहास राजस्थान प्रदेश के बीते युग का गौरवगान प्रस्तुत करता है। इतिहास के लंबे कालखंड तक सरस्वती नदी इस प्रदेश के गौरव का प्रतीक बनी रही। राजस्थान में मानव सभ्यता पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल, नवपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल के अनेक चरणों से होते हुए विकसित कांस्ययुगीन तथा लौहयुगीन सभ्यता के चरण में पहुंची। भौगोलिक परिवेश की विषम परिस्थितियों के बावजूद भी इतिहास के इन सभी कालखंडों के अध्ययन से

राजस्थानी लोगों का उनके पर्यावरण के साथ एक घनिष्ठ अंतर्संबंध देखने को मिलता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक राजस्थानी संस्कृति अपने सभ्य स्वभाव तथा शालीन मेहमाननवाजी के लिए और यहां के प्राकृतिक मनोहारी वातावरण के कारण राजस्थान प्रदेश पूरे देश में प्रसिद्ध है।

लोक साहित्य और पर्यावरण

लोक साहित्य जिनमें लोक कथाएं, लोकगीत, किंवदंतिया, गाथा गीत, लोक नाट्य शामिल है इनमें पर्यावरण से जुड़े अनेक संदर्भ देखे जा सकते हैं जैसे– पर्यावरण और परंपरा, पर्यावरण और संस्कार, पर्यावरण और प्राकृतिक न्याय आदि। ये संदर्भ लोक साहित्य के साथ–साथ इतिहास, भूगोल जैसे विषयों को भी दिशा प्रदान करते हैं तथा भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के नवीन मूल्यो, जीवन दर्शन, लोकाचारो, प्राचीन मूल्य मान्यताओं की झलक प्रस्तुत करते हैं।

आदिकालीन मानव ने प्रकृति द्वारा उन्हें दिए गए विभिन्न कल्याणकारी परिणामों से प्रभावित होकर प्रकृति पर जो विश्वास (प्रकृति प्रेम, प्रकृति सम्मान, प्रकृति पूजा आदि) आरोपित किए प्रकृति से जुड़े ये विश्वास हरियाणवी लोक साहित्य में भी अनेक आधारों पर देखे जा सकते हैं। सांप को दूध पिलाना, पीपल, बरगद, तुलसी, केले आदि की पूजा अर्चना करना, विभिन्न प्राकृतिक परिस्थितियों से किसी भी घटना का पूर्वानुमान लगा लेना आदि लोक मान्यताएं स्पष्ट करती हैं कि राजस्थानी लोक साहित्य प्राकृतिक पर्यावरण तथा उससे जुड़े उपादानो, जिनमें– जल, भूमि, वायु, पर्वत, पठार, वर्षा, पेड़–पौधे, जीव जंतु आदि से जुड़ी लोक मान्यताओं की जानकारी से समृद्ध लोक साहित्य है। आज भी ग्रामीण अंचल में नाग पूजा, वृक्ष पूजा, कहावतों, गीतों के माध्यम से वर्षा, अकाल संबंधित प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणियों का प्रचलन है। लोक कथाओं और लोक परंपराओं में समान रूप से प्रकृति को ऐसी सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है जिसे प्रदूषित करना अपराध है।[6]

राजस्थानी कहावतों में पर्यावरण से जुड़े संदर्भ एवं जीवन मूल्य

कहावतों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। जब लेखन कला की शुरुआत भी नहीं हुई थी तब भी भारतीय स्त्री–पुरुष अपने तथा अपने पूर्वजों के अनुभव के आधार पर कहावतों का प्रयोग करते थे। कहावतों के संदर्भ में प्रायः कहा जाता है कि–काल खणै पण ओखाणा अखै अर्थात काल तो नश्वर है, परंतु कहावतें अक्षय हैं और नश्वर काल की जानकारी हम कहावतों में शाश्वत रूप से प्राप्त कर सकते है। राजस्थान प्रदेश में बहुत सारी कहावतें लोक कथाओं के रुप में पौराणिक साहित्य मे, रामायण व महाभारत काल से ही प्राचीन राजस्थान प्रदेश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा पर्यावरणीय इतिहास का गौरवगान कर रही है। ये कहावतें संपूर्ण राजस्थान प्रदेश के साथ–साथ थोडे बहुत बदलाव अपनाते हुए उनके पडोसी राज्यों जिनमें हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड तथा केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली व चंडीगढ़ क्षेत्रों में भी बोली जाती है। जो मानव जीवन मूल्यों की स्पष्ट छवि प्रस्तुत करती है। कहावतें वह दर्पण होती हैं जिनमें लोक जीवन के अनेक आयाम सहज ही उद्घाटित हो जाते हैं। ऑक्सफोर्ड कंसाइज डिक्शनरी के अनुसार– सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त संक्षिप्त और सारपूर्ण उक्ति को कहावत कहा जाता है। जिनमें जनता के अनुभव का निचोड़ व सार होता है।[7] सभी परिभाषाओं का विवेचन कर कहा जा सकता है कि कहावतें–

- संक्षिप्त, सारपूर्ण अथवा लोकप्रिय वाक्य होती हैं।
- कहावतें मानव जीवन के अनुभवों का निचोड़ होती हैं।
- कहावतों के माध्यम से राष्ट्र का व्यावहारिक ज्ञान होता है।

राजस्थान की लोक सांस्कृतिक विरासत में अतीत का खजाना छिपा हुआ है। यहां की ग्रामीण किसानी संस्कृति लोक पारम्परिकता की द्योतक है। राजस्थानी लोक साहित्य में पर्यावरण से जुड़ी ऐसी हजारों कहावतें हैं जो मानव जीवन में पर्यावरण के महत्व को प्रकट करने के साथ–साथ लोगों की उसके संरक्षण, प्रबंधन की चेतना, प्राकृतिक न्याय की व्यवस्था, धर्म आस्था, धर्मवाद को स्पष्ट करती है। जैसे–

'राजा माने सों राणी धरती मानें सौ पाणी'[8]

आश्य यह है कि जिस प्रकार राजव्यवस्था राजा की सत्ता स्वीकार करती है, उसी प्रकार धरती द्वारा पानी की सत्ता स्वीकार करने की बात आई है। अतः प्रस्तुत कहावत में यह वर्णित करने का प्रयास किया गया है कि जिस प्रकार धरती के लिए पानी का महत्व है उसी प्रकार संपूर्ण राज व्यवस्था के लिए राजा का महत्व है।

'बेटी री माँ राणी भुरे बुढापे पाणी'[9]

अर्थात जब तक घर में बेटी है तब तक माँ रानी के समान जीवन यापन करती है। लेकिन पुत्री के विवाह पश्चात हर काम उसे स्वयं करना पड़ता है। प्रस्तुत कहावत में पानी भरने की स्थिति को पुत्री के विवाह पश्चात माता के जीवन में आने वाली मुसीबतों के रूप मे लिया गया है।

'पाणी मे कवाडी लगाया दोई नई व्हे'[10]

भाव यह है कि भाई–भाईयो मे कोई चाहे कितनी भी लडाईयां कराए वो कभी अलग नहीं हो सकते उनका संबंध तो जल की तरह है। प्रस्तुत कहावत मे पर्यावरण के पाँच आवश्यक तत्वों में से एक तत्व जल के माध्यम से सामाजिक जीवन मे भाईयों के बीच के अटूट प्रेम को प्रकट किया गया है।

राजस्थानी लोक साहित्य में ऐसी अनेक कहावतें प्रचलन में थी जिनसे पता चलता है कि लोग प्राकृतिक घटनाओं का पहले से ही अंदाजा लगा लेते थे और घटना के घटित होने से पहले ही वे अपने आप को सक्षम बना लेते। कुछ ऐसी ही राजस्थानी कहावतों का विवरण इस प्रकार है।

ऊँचो नाग चढे तर ओढे, दिस पिछमाण बादला दौडे।
सारस चढे आसमान सजोडे, तो नदियां ढावा जल तोडे।।[11]

अभिप्राय यह है कि यदि सर्प पेड पर चढे, बादल पश्चिम की तरफ दौडे और सारस अपनी संगिनी के साथ आसमान मे ऊंचा चढे तो समझना की अपार पानी बरसने वाला है।

जेठ मांस जै रवि तपै, बाजै उना बाव।
तो जाणिजे भडली, पहवी नीर न मान।।[12]

यदि ज्येष्ठ माह गर्म हो, गर्म हवा चलती हो तो निश्चित समझिए कि पृथ्वी पर अपार जल बरसने वाला है।

म्हारी गौर तिसाई ओ राज।
ते आख्या माय खून बरसें।।[13]

यह गीत राज और समाज पर व्यंग्य के रूप में प्रयुक्त हुआ है जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि हम अपनी विरासत में एक सुव्यवस्थित जल प्रबंधन प्रणाली को जानते हुए भी उससे अनजान बने हुए हैं। आधुनिक जीवन शैली को जीते

हुए व्यक्तियों के पास इतना समय नहीं है कि वह प्राणी जन और वनस्पतियों के लिए परंपरागत समाज के जल प्रबंधन के लिए किए जाने वाले सामाजिक पुण्यार्थ कार्यो एवं विचारों को सोचे।

आषाढ़ चुक्यो करसो अर डाल चुक्यो बांदरो[14]

आषाढ़ का चूका किसान और वृक्ष की डाल से चूका बंदर सहज ही नहीं संभल पाते। अतः प्रस्तुत कहावत में किसान के लिए आषाढ़ तथा बंदर के लिए डाल का महत्व बताते हुए मानव जाति को समझाने का प्रयास किया गया है कि उचित समय पर किया गया कार्य ही फलदायी होता है।

अन्य कहावतें जिनका आज भी ग्रामीण अंचल में रहने वाले किसान वर्षा तथा अकाल की स्थिति का पूर्वानुमान लगाने के लिए प्रयोग करते हैं उनमें प्रमुख–काल केरडा सुगालै बोर अर्थात कैर की झाड़ी पर अत्यधिक फल लगे तो यह अनुमान लगाया जाता है कि वर्षा नहीं होगी और अकाल पड़ेगा एवं बेर की झाड़ियों पर अधिक बेर लगे तो अच्छी वर्षा होने के संकेत मिलते हैं। आसोजा मे मोती बरसे अर्थात अश्विन मास में होने वाली थोड़ी वर्षा भी खेती के लिए मूल्यवान होती है। इस प्रकार राजस्थान में पर्यावरण–पारिस्थितिकी, प्राकृतिक मूल्यों से जुड़ी ऐसी ही प्रमुख अनगिनत कहावते है जो राजस्थानी लोगों के जीवन मूल्य को स्पष्ट करती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि राजस्थानी कहावतें मनुष्य के जीवन के हर पहलू को सूक्ष्मता से प्रकट करती हैं। इनके द्वारा मनुष्य के आचार–विचार, रहन–सहन, खानपान, संस्कारों, लोक आदर्शों को उजागर किया गया है। जो मानव जाति को अतीत से साक्षात्कार करवाती है वहीं भविष्य के लिए दिशा बोध प्रदान करती है।

राजस्थानी गीतों में पर्यावरण से जुड़े संदर्भ एवं जीवन मूल्य

लोकगीतों का उद्भव उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव सभ्यता का इतिहास। प्राचीन काल से ही मानव अपने भावों को लयात्मक ढंग से व्यक्त करता आया है। जिसके माध्यम से लोकगीतों का विकास हुआ। मुख्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जाता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनंद के तरंग में जो छंदोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है वही लोकगीत है।[15] प्रकृति के संसर्ग में रहने के कारण प्रकृति के साथ अंतर्संबंध (सुखद या दुःखद) की स्वाभाविक अभिव्यक्ति इन लोक गीतों में देखी जा सकती है। राजस्थानी लोकगीतों में लोक संस्कृति की झलक मिलती है जिनमें राजस्थान की विषम परिस्थितियों में भी ग्रामीण अंचल के लोगों के विपदा को हंसते–हंसते सहने की संजीवता तथा पशु–पक्षियों, तालाब, पेड़–पौधों और पर्यावरण के अन्य तत्वों के साथ सह अस्तित्व की अवधारणा स्पष्ट उद्घाटित होती है। राजस्थानी लोकगीत इस प्रदेश के पर्यावरण, लोगों के पर्यावरण के प्रति चेतना की समझ प्रदान करते हैं जिनके जरिए पर्यावरण चेतना की शिक्षा और संस्कार भावी पीढ़ी में प्रवाहित होते रहे हैं। तथा लोकमानस अपनी चेतना से इसे संरक्षित रखने का प्रयास करते रहे हैं क्योंकि पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना निराधार है।

राजस्थान में 'चौमासे' के काल से संबंधित अनेक लोकगीत प्रचलित है। ये गीत जहां एक ओर बारिश के आगमन की खुशी को व्यक्त करते हैं क्योंकि बारिश अच्छी होने से ही अच्छी फसल की उम्मीद की जा सकती है वही दूसरी ओर बुवाई, कटाई, उपज को खलियान से घर तक लाने के लिए पूरे परिवार को ईमानदारी से कार्यरत रहने की स्थिति को स्पष्ट करते है। अतः ऐसे अनेक गीत है जो चौमासे के मौसम को व्यक्त करने के साथ–साथ राजस्थानी मानवीय जीवन मूल्यों, पारिवारिक एकता की झलक प्रस्तुत करते हैं। राजस्थानी 'कूकड़ी' लोकगीत सूर्योदय के साथ बारिश के मौसम में खेत और बाड़ियों में नए–नए पौधे लगाने और उनका मेहनत के साथ संरक्षण करने का आह्वान करता है।

दिन उग्यो कूकडी बोले रे
आई नव प्रभात
गांव रां गीगां हंस लयौ रे
गी अंधारी रात
नवां नवां हो झाड़ हाथ ले
सोडला में चालौ–चालौ
खेतड़ला में चालौ
आयो नव प्रभात
कान खोल क सुण ल्यौ जवानों
धरती सोना निपजै रे
मेहनत सूं, मेहनत सूं
गी अंधारी रात
दिन उग्यौ कूकड़ी बोले रे
आयो नव प्रभात।[16]

'ईतल–पीतल रो बेवड़ो'

राजस्थानी लोकगीत में नायिका और नायक के रूठने और मनाने की घटना उल्लेखित है लेकिन इस घटना में पणघट की महत्ता और पानी के मोल को बड़े प्रभावी ढंग से समझाया गया है। काला कागला[17] लोकगीत अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस गीत के माध्यम से अनिष्ट माने जाने वाले कौए को भी मरुधरा की लोक संस्कृति में विशेष सम्मान दिया गया है। कौए के मुंडेर पर बोलने का मतलब यह समझा जाता है कि प्रदेश गए पति घर लौट कर आने वाले हैं। बुगलौ लोकगीत के माध्यम से विवाहिता अपनी व्यथा बुगले के माध्यम से अपने पिता को बताती है कि रेगिस्तान का शुष्क जीवन उसके लिए कितना कठिन है। इस गीत में कैर के पेड़ का भी वर्णन मिलता है जिसमें यह जानकारी मिलती है कि कैर का कांटा बहुत ही खतरनाक होता है। कैर री हूंस गीत के माध्यम से गर्भवती महिला की इच्छा के रूप में कैर और तालाब के आगोर के संरक्षण का संदेश दिया गया है। कैर को राजस्थान में प्रायः रेगिस्तान का मेवा माना जाता है।

लागियौ धण ने पेलौ जी मास, छायां सुहावै
ओ म्हारै ससुराजी रे हाथ री जी
आ तो हूंस भली थे घर नार, थ्हारौ ससुरौजी पुरावै
ओ बडभागन जगा थ्हारी मनरली.....[18]

इस प्रकार अनेक ऐसे राजस्थानी लोकगीत प्रारंभ से ही प्रचलन में है जो स्थानीय पेड़–पौधों, जीव–जंतुओं, नाड़ी–तालाब और स्थानीय परिवेश का वर्णन करते हुए लोकमानस के मन में उनके संरक्षण, प्रबंधन तथा पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के बीच संतुलन बनाए रखने की चेतना जागृत करते आए हैं।

राजस्थानी लोक कहानियों में पर्यावरण से जुड़े संदर्भ एवं जीवन मूल्य

राजस्थान में वीरता, प्रेम, धार्मिकता से संबंधित अनेक ऐसी कहानियां है जिनमें पर्यावरण चेतना के स्वर मुखरित होते हैं।

दादा–दादी, नाना–नानी आदि के माध्यम से इन कहानियों से जुड़े पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण चेतना के संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाहित होते रहे हैं। कहानी गादड़ौ अर लूंकड़ी में गीदड़ की धूर्तता और लोमड़ी की चालाकी का वर्णन मिलता है। साथ ही साथ इस कहानी के माध्यम से तलाब, पाल, जंगल, जंगल के पेड़–पौधों के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कहानी में नैतिक शिक्षा के साथ–साथ पर्यावरण, पारिस्थितिक तंत्र की जानकारी दी गई है। अन्य कहानी **जूं** में अतिरंजना है लेकिन इसे बुरा नहीं माना जा सकता। क्योंकि इसमें बताया गया है कि अन्य जीवों का भक्षण करने वाली जूं का अंत आखिर में दुःखद होता है और उसकी मौत पेट फूटने और निगले गए जानवरों के जीवित निकलने के रूप में होती है। अतः इसके माध्यम से स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि जो जैसा कर्म करता है उसकी गति वैसी ही होती है। कहानी महादेव जी अर करसौ में कई साल तक बारिश न होने पर अकाल की विपदा का वर्णन किया गया है। इस कहानी में जन कल्याण के लिए भगवान और किसान के संवाद के माध्यम से भगवान को भी बारिश करवाने के लिए मजबूर कर कर देने का वर्णन है। इस प्रकार राजस्थानी लोक कहानियां जिज्ञासा पैदा करने के साथ–साथ अपने पर्यावरण तथा लोक जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देती हैं।

निष्कर्ष

लोक संस्कृति तथा लोक साहित्य का अवलोकन करके निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि लोक साहित्य, लोक संस्कृति किसी भी समाज का दर्पण है जो प्राचीन मानव जीवन मूल्यों, लोकाचारों, रीति–रिवाजो, आदर्शों को आज के मानव समाज से परिचित करवाती है तथा अनेक आधारो पर भविष्य का दिशा बोध प्रदान करती है। लोक संस्कृति के संदर्भ में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि– लोक संस्कृति सामाजिक परिष्कार के लिए पारस–पथरी के समान है।[19] कहावते तथा लोक गीत भी लोक साहित्य में अतीत की प्रतिध्वनि के रूप में जाने जाते हैं। जो मानव समाज, संस्कृति के उच्चतम प्रतिमानों को सहज रूप में संजोकर रखते है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान प्रदेश में प्रचलित ऐसी अनेक कहावतों, कहानियों तथा लोक गीतों का संग्रह किया गया है जिसमें अनेक आधारों पर मानव तथा पर्यावरण के अंतर्संबंधो तथा पर्यावरण और मानव जीवन मूल्यों का सहज ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय, त्रिलोचन, लोक साहित्य का अध्ययन, लोक भारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1978, पृ. 10
2. सोकलोव, वाई. एम., रशियन फॉकलोर, अध्याय 1, मीर प्रकाशन, मॉस्को, प्रथम संस्करण, 1950
3. https://shabdkosh.raftaar.in] vfHkxeu frfFk 23 vçSy] 2022
4. संस्कृत, नानूराम, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रंथागार, तृतीय संस्करण, जोधपुर, 2014, पृ. 153
5. वालिया, दीपिका, हरियाणवी संस्कृति के विविध परिदृश्य, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 163–164
6. कुमार, ध्रुव, बौद्ध धर्म और पर्यावरण, प्रभात प्रकाशन, 2019, पृ. 87
7. https://www.shabdkosh.com vuqxeu frfFk 7 ebZ] 2022
8. देथा, एस. विजयनाथ, राजस्थानी हिंदी कहावत कोश, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2004, पृ. 3048
9. राठौर, मनोहर सिंह, राजस्थानी कहावतें, भाग तृतीय, पृ. 137
10. देथा, एस. विजयनाथ, पूर्वोक्त, भाग चतुर्थ, पृ. 2021
11. राठौर, मनोहर सिंह, पूर्वोक्त, भाग प्रथम, पृ. 88
12. राठौर, विक्रम सिंह, राजस्थानी साहित्य में पानी, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2005, पृ. 22
13. जिबाईल, जल, जीवन और समाज, एनी बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009, पृ. 162
14. कानोडिया, भागीरथ और अग्रवाल, गोविंद, राजस्थानी कहावत कोश, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 18
15. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक, पृ. 250
16. गालवा, हनुमान, राजस्थानी साहित्य में पर्यावरण चेतना, जवाहर कला केंद्र, जयपुर, 2015, पृ. 25
17. उड़ उड़ रे मेरे काले कौए
    मेरे पिया कब घर आएंगे
    कब मेरे पिया घर आएंगे
    उड़ उड़ रे मेरे काले कौए
18. गालवा, हनुमान, पूर्वोक्त, 2015, पृ. 52
19. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक, संवत 2010, पृ. 10